Jawani Kaise Guzaren ? (Hindi)

जवानी कैसे गुज़ारें ?

बयान : 2

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

18 रबीउ़ल अव्वल 1412 हि. मुताबिक़ 26 सितम्बर 1991 ई. बरोज़ जुमे'रात हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دامت برکاتہم العالیہ ने दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़ में "जवानी की इ़बादत के फ़ज़ाइल" के उ़न्वान से बयान फ़रमाया, जिस की मदद से येह रिसाला नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जवानी कैसे गुज़ारें ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का येह बयान मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस बयान को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

जवानी कैसे गुज़ारें ?

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अज्रो सवाब की दौलत पाने के साथ साथ जवानी की इबादत और इस की क़द्र व अहम्मिय्यत जानने का मौक़अ़ मिलेगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : ''ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और हि़साब किताब से जल्द नजात पाने वाला वोह शख़्स होगा, जिस ने दुन्या में मुझ पर **कसरत से दुरूद पढ़ा होगा ।**''

(جَمْعُ الْجَوَامِع، ۹/۱۲۹، حدیث:۲۷۶۸۶ مختصراً)

ह़श्र की तीरगी सियाही में नूर है, शम्ए़ पुर ज़िया है दुरूद
छोड़ियो मत दुरूद को काफ़ी राहे जन्नत का रहनुमा है दुरूद

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जवानी की तलाश

हि़कायत बयान की जाती है कि एक बूढ़ा शख़्स कहीं से गुज़र रहा था, बुढ़ापे की वज्ह से उस की कमर इस क़दर झुकी हुई थी कि चलते हुए यूं लगता था कि येह बूढ़ा शख़्स

ज़मीन से कुछ तलाश कर रहा है। एक नौ जवान को मस्ख़री सूझी और कहने लगा : बड़े मियां ! क्या तलाश कर रहे हो ? बात अगर्चे ग़ुस्सा दिलाने वाली थी मगर उस बूढ़े ने सब्र व बरदाश्त और समझदारी का कमाल मुज़ाहरा किया और त़न्ज़ के इस ज़हरीले कांटे के जवाब में फ़िक्र अंगेज़ मदनी फूल पेश करते हुए फ़रमाया : **"बेटा ! मैं अपनी जवानी तलाश कर रहा हूं।"** तीखे जुम्ले का येह ख़िलाफ़े तवक़्क़ोअ़ ह़ैरान कुन जवाब सुन कर वोह नौ जवान चौंका और कहने लगा : बाबा जी ! आप की बात समझ नहीं आई, क्या जवानी भी कभी ढूंडी जा सकती है ? और क्या येह एक दफ़्अ़ा गुम हो कर फिर कभी किसी को मिली है ? फ़रमाया : बेटा ! येही तो अफ़्सोस है कि जब जवानी की ने'मत मेरे पास थी उस वक़्त इस की पासदारी न कर सका और आज जब मैं इस से हाथ धो बैठा तब इस की अहम्मिय्यत का एह़सास हुवा। काश ! मुझे जवानी का ज़माना एक बार फिर मिल जाता तो माज़ी में होने वाली ग़लतियों और कोताहियों की तलाफ़ी करता और ख़ूब दिल लगा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता।

اَلَا لَیْتَ الشَّبَابَ یَعُوْدُ یَوْمًا

فَاُخْبِرُہٗ بِمَا فَعَلَ الْمَشِیْبُ

या'नी हाए काश ! मेरी जवानी कभी पलट कर आती, तो मैं उस को बताता कि बुढ़ापे ने मेरे साथ क्या सुलूक किया।

फिर एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची और कहा :

अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! मैं अपनी जवानी की दौलत लुटा बैठा, लेकिन "**अब पछताए क्या होवत जब चिड़ियां चुग गईं खेत ।**" मैं ने जवानी की ना क़द्री की, उस वक़्त नेकी की न आख़िरत की कोई तय्यारी की और यूंही मेरी जवानी ग़फ़्लत के बिस्तर पर सोते गुज़र गई ।

दिन भर खेलों में ख़ाक उड़ाई   लाज आई न ज़र्रों की हंसी से
शब भर सोने ही से ग़रज़ थी   तारों ने हज़ार दांत पीसे

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

अब जब कि बुढ़ापा त़ारी हो गया, तो सिह्ह़त कमज़ोर और जिस्म लाग़र हो गया, कस्रते इ़बादत का शौक़ तो पैदा हुवा लेकिन बुढ़ापे के सबब ह़ौसला साथ छोड़ गया ।

फिर वोह ज़ईफ़ुल उ़म्र शख़्स उस नौ जवान पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए कहने लगा : **बेटा ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो एह़सान से तुम अभी **नौ जवान** हो, इस से फ़ाएदा उठा लो, इ़बादत पर कमर बस्ता हो जाओ, कमर झुकने से पहले रब तआ़ला के हु़ज़ूर सर को झुका लो, वरना बुढ़ापे में मेरी त़रह़ कमर झुकाए जवानी को तलाश करते फिरोगे लेकिन ह़स्रतो नदामत के सिवा कुछ न मिलेगा । कफ़े अफ़्सोस मलते रहोगे लेकिन हाथ कुछ न आएगा और ह़ालात का कुछ इस त़रह़ से सामना होगा : "**बचपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया, बुढ़ापा देख कर रोया ।**"

इस मुश्फ़िक़ाना और नासिह़ाना अन्दाज़े गुफ़्तगू और

इन्फ़िरादी कोशिश के मदनी फूलों की ख़ुश्बू ने उस नौ जवान के दिलो दिमाग़ को मुअ़त्त़र और उसे बेह़द मुतअस्सिर किया। थोड़ी देर पहले उस बूढ़े पर त़न्ज़ के तीर चलाने वाला नौ जवान इन्फ़िरादी कोशिश से मुतअस्सिर हो कर अब उसी बूढ़े के सामने आयिन्दा के लिये जवानी की क़द्र और परहेज़ गारी की ज़िन्दगी बसर करने का अ़ह्दो पैमान कर रहा था।

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान "**सामाने बख़्शिश**" में जवानी की क़द्रदानी का दर्स देते हुए फ़रमाते हैं :

रियाज़त के येही दिन हैं, बुढ़ापे में कहां हिम्मत
जो कुछ करना हो अब कर लो, अभी नूरी जवां तुम हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईंट के जवाब में फूल पेश कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा पुर ह़िक्मत ह़िकायत अपने दामन में इ़ब्रत व नसीह़त के बेश बहा मदनी फूल लिये हुए है। उन में से एक मदनी फूल येह है कि अगर कोई आप से तन्क़ीदी लहजा या त़न्ज़िया रवय्या अपनाए तो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए **सब्रो तह़म्मुल से काम लीजिये।** मौक़अ़ की मुनासबत से अह़सन अन्दाज़ में समझाने की कोशिश और ज़हरीले कांटों के जवाब में मदनी फूल पेश करने की रविश اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी नताइज से सरफ़राज़ करेगी बल्कि इस

मदनी मक़्सद की राह में आसानियां पैदा कर के मदनी इन्क़िलाब बरपा कर देगी कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

तू पीछे न हटना कभी ऐ प्यारे मुबल्लिग़
शैत़ान के हर वार को नाकाम बना दे

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकी की दा'वत आ़म कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से येह मदनी फूल भी मिला कि मुसल्मानों को समझाने और **"नेकी की दा'वत"** आ़म करने की कोशिश करते रहना चाहिये कि इस में अपनी और दीगर इस्लामी भाइयों की दीनी व दुन्यवी भलाइयां पोशीदा हैं, जैसा कि पारह **27 सूरतुज़्ज़ारियात**, आयत नम्बर **55** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝۵۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा
बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मताए वक़्त की क़द्र कीजिये

इस हि़कायत से येह भी पता चला कि वक़्त की ना क़द्री बिल आख़िर नदामत लाती है, ख़ुसूसन अय्यामे जवानी में बे फ़िक्री, ला परवाही और इन ह़सीन लम्ह़ात की बे क़द्री बुढ़ापे में पछतावे का सबब बनती है। क्यूं कि जिन की जवानी का सफ़र गुनाहों की तारीकियों में गुज़रता है जब वोह बुढ़ापे के आ़लम में नेकियों की रोशनियों की त़रफ़ रुख़ मोड़ते हैं तो बहुत देर हो चुकी होती है और उस वक़्त आदमी कुछ करना भी चाहे तो जिस्म व आ'ज़ा की कमज़ोरी और सिह़्ह़त की ख़राबी ह़ौसले पस्त कर देती है, लिहाज़ा जब तक जवानी की ने'मत है और सिह़्ह़त सलामत है, तो इस को ग़नीमत जानते हुए ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत और अच्छे कामों की आ़दत पर इस्तिक़ामत पाने की कोशिश कीजिये और अगर आज नेकियों से जी चुरा कर, बदियों में दिल लगा कर हिम्मत व सलाहि़य्यत और वक़्त की ने'मत गंवा बैठे तो कल पछतावा होगा लेकिन उस वक़्त का पछताना और अफ़्सोस से हाथ मलना किसी काम न आएगा। वक़्त की तेज़ रफ़्तार धार हमारे लैलो नहार (या'नी दिन रात) को काटती चली जा रही है, वक़्त की लगाम कब किसी के हाथ आई है और वक़्त की गाड़ी से कौन कहे कि ज़रा आहिस्ता चल ! पस आज वक़्त की क़द्र कीजिये और इस से फ़ाएदा उठाइये वरना फिर गया वक़्त याद तो आएगा मगर हाथ न आएगा।

सदा ऐश दौरां दिखाता नहीं
गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ **1548** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़हा **713** पर है : "लुग़ात की कुतुब के मुताबिक़ (बालिग़ होने से ले कर) **30** या **40** बरस तक आदमी जवान रहता है, **30** या **50** बरस जवानी और बुढ़ापे का दरमियानी वक़्फ़ा या'नी **उधेड़** और इस के बा'द **बुढ़ापा** आ जाता है।"

फ़ैज़ाने क़ुरआन और नौ जवान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिमाग़ी और जिस्मानी सलाह़िय्यतों से सह़ीह़ मा'नों में जवानी ही में काम लिया जा सकता है, इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और मुत़ालआ़ करने की उ़म्र भी जवानी ही है, बुढ़ापे में तो बारहा अ़क़्लो फ़हम की क़ुव्वतें बेकार हो कर रह जाती हैं, ग़ौरो फ़िक्र की सलाह़िय्यतें मांद (हलकी, कमज़ोर) पड़ जाती हैं, याद दाश्त का ख़ज़ाना ख़ाली हो जाता है, दिमाग़ ख़लल का शिकार होने के सबब इन्सान बच्चों की सी ह़रकतें करने लग जाता है और उस से बा'ज़

अवक़ात ऐसी **मुज़्हका ख़ैज़** ह़रकात का सुदूर होता है कि बे इख़्तियार हंसी आ जाए। लेकिन ख़ुश ख़बरी है उस नौ जवान के लिये जो तिलावते क़ुरआन का आ़दी है कि अगर ऐसे नौ जवान को बुढ़ापा आया तो वोह इन आज़्माइशों और आफ़तों से मह़फ़ूज़ रहेगा। जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِی नक़्ल फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इक्रिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जो मुसल्मान तिलावते क़ुरआन का आ़दी हो, उस पर اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ येह (या'नी जवानी में ह़ासिल किये गए इल्म को बुढ़ापे में भूलने की) ह़ालत त़ारी न होगी।" (नूरुल इरफ़ान, पारह : 17, अल ह़ज्ज, तह़्तल आयह : 5)

फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही ! बस शौक़ मुझे ना'तो तिलावत का ख़ुदा दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जवानी की इ़बादत बुढ़ापे में सबबे आ़फ़िय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा रिवायत से पता चला कि तिलावते क़ुरआन करने वाला नौ जवान अगर बुढ़ापे की दहलीज़ पर पहुंच गया तो क़ुरआन की तिलावत की बरकत से उस ह़ालत में निस्यान (या'नी भूल जाने) की आफ़त से मह़फ़ूज़ रहेगा। येह मन्ज़र तो आ़म मुलाह़ज़ा किया जा सकता है कि अक्सर बूढ़े हिज़्यान (या'नी बेहूदा गोई) व निस्यान (भूल जाने) के मरज़ में मुब्तला नज़र आते हैं लेकिन बा'ज़ ख़ुश नसीब ऐसे

भी हैं जो अगर्चे बुढ़ापे की मन्ज़िल से हम कनार हैं, लेकिन फिर भी इल्मी जलालत और ज़ेहनी क़ुव्वत की ऐसी शानो शौकत कि देखने वाले को वर्त़ए ह़ैरत (या'नी इन्तिहाई ह़ैरत) में डाल दें, इन सारी अ़ज़मतों का एक सबब **जवानी की इबादत** और क़ुरआने पाक की तिलावत है।

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! जवानों में इबादतो रियाज़त का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ाने और ता'लीमे क़ुरआन को अ़ाम करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की भरपूर कोशिशें क़ाबिले सिताइश हैं। जिन में से एक "**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**" भी है, मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मसाजिद में उ़मूमन बा'द नमाज़े इशा हज़ारहा **मद्रसतुल मदीना** की तरकीब होती है, जिन में इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से, ह़ुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखते, दुआ़एं याद करते, नमाज़ें दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं।

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं अ़ाम हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

मद्रसतुल मदीना बालिग़ात

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल के तह़त क़ुरआने पाक की ता'लीम (ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा) को अ़ाम करने के

लिये इस्लामी भाइयों के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के साथ साथ बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों के मद्रसतुल मदीना बालिग़ात की भी तरकीब है, जिस में हज़ारों इस्लामी बहनें कु़रआने पाक की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल करती हैं। इन मदारिस में इस्लामी बहनें ही इस्लामी बहनों को पढ़ाती हैं, इस के इ़लावा कई मदारिस बनाम "**मद्रसतुल मदीना**" क़ाइम हैं। मुल्क में कमो बेश **2064** मदारिस क़ाइम हैं, जिन में तक़रीबन **101410** मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है।

अ़त़ा हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का
ख़ुदाया ज़ौक़ दे कु़रआन पढ़ने का, पढ़ाने का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया

दा'वते इस्लामी के शो'बे "**मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान**" ने एक नौ जवान के लिये कु़रआन सीखना, अख़्लाक़ियात संवारना, इ़बादात में दिल लगाना बल्कि यूं समझिये कि **आख़िरत का सामान करना आसान कर दिया है**। जैसा कि एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : "मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा थे। जिन में مَعَاذَالله **V.C.R** की लीड (Lead) सप्लाय करना, रातों को औबाश लड़कों के साथ घूमना, रोज़ाना

दो बल्कि तीन तीन फ़िल्में देखना, वेराइटी प्रोग्राम्ज़ (Variety programs) में रातें काली करना शामिल है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई की मुसलसल **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से अ़लाक़े के **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में जाने की तरकीब बनी और इस त़रह़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत मिली और मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर मदनी कामों में मसरूफ़ हो गया।"

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 147)

हमें आ़लिमों और बुज़ुर्गों के आदाब सिखाता है हर दम सदा मदनी माह़ोल
हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई है बेह़द मह़ब्बत भरा मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी को ग़नीमत जानिये

जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून औदी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : पांच (चीज़ों) को पांच से पहले ग़नीमत जानो : "**बुढ़ापे से पहले जवानी को**, बीमारी से पहले तन्दुरुस्ती को, फ़क़ीरी से पहले अमीरी को, मसरूफ़िय्यत से पहले फ़ुरसत को और मौत से पहले ज़िन्दगी को।"

(مِشْکَاةُ الْمَصَابِیْح،کتاب الرقاق، الفصل الثانی، ۲/۲۴۵، حدیث:۵۱۷۴)

मश्हूर सूफ़ी शाइर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुस्लिहुद्दीन सा'दी शीराज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं :

کُنُونَت کِہ دَسْتَست خارِی بُکُن

دِگَر کی بَرآرِی تُو دَسْت اَزْ کَفَن

(بوستانِ سعدی، باب اوّل،درعدل و تدبیر و رای، ص۴۸)

(या'नी ऐ ग़ाफ़िल शख़्स ! अब जब कि तेरे सिह़्ह़त व हिम्मत वाले हाथ कुशादा हैं तो इन हाथों से कोई काम कर ले, कल जब येह कफ़न में बंध जाएं तो फिर खुलना कहां नसीब !)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी की क़द्र कीजिये

जवानी के मुतअ़ल्लिक़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى के तह़रीर कर्दा कलाम का ख़ुलासा है : जवानी खेलकूद में गंवा कर बुढ़ापे में जब कि आ'ज़ा बेकार हो जाएं, कस्रते इ़बादत की ख़्वाहिश करना बे वुक़ूफ़ी है, जो करना है जवानी में कर लो कि जवाने सालेह़ का बहुत बड़ा दरजा है । लिहाज़ा सिह़्ह़त, जवानी, मालदारी और ज़िन्दगी को राएगां (या'नी ज़ाएअ़) न जाने दो, इस में नेक आ'माल कर लो कि येह ने'मतें बार बार नहीं मिलतीं । मियां मुह़म्मद बख़्श رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

सदा न हुस्न जवानी रहंदी, सदा न सोह़बते यारां

सदा न बुलबुल बाग़ां बोले, सदा न बाग़ बहारां

या'नी येह ह़सीन जवानी हमेशा सलामत नहीं रहती और न ही दोस्त व अह़बाब की सोह़बतें हमेशा बाक़ी रहती हैं। बाग़ में रोज़ाना चह्चहाने वाली बुलबुलें और बाग़ की बहारें भी सदा रहने वाली नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 16 ब तसर्रुफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ब वक़्ते रिह़्लत ह़ज़रत अमीरे मुआ़विया का फ़रमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का जब वक़्ते विसाल क़रीब आया, तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे बिठाओ।" जब बिठाया गया तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **ज़िक्रुल्लाह** और **तस्बीह़** में मश्ग़ूल हो गए। फिर रोते हुए अपने आप को मुख़ात़ब कर के (बत़ौरे आ़जिज़ी) फ़रमाने लगे : "ऐ मुआ़विया (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ! अब बुढ़ापे और कमज़ोरी के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र याद आया, उस वक़्त क्या था जब **जवानी की शाख़** तरो ताज़ा थी।"

(لُبَابُ الْاِحْیَاء، الباب الاربعون فی ذکر الموت ومابعده، ص۳۵۲، مختصراً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गों की आ़जिज़ी हमारे लिये रहनुमाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام किस क़दर नेकियों के क़द्रदान और आ़जिज़ी के पैकर थे कि मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलीलुल

क़द्र सह़ाबी होने और सारी ज़िन्दगी नेकियों में बसर करने के बा वुजूद ह़सरत है कि काश ! कस्रते इ़बादतो रियाज़त की मज़ीद सआ़दत नसीब हो जाती, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस आ़जिज़ी में हमारे लिये रहनुमाई है कि ऐ जवानो ! जवानी बहुत बड़ी ने'मत है, इस की क़द्र करो, इसे फ़ुज़ूलियात में मत गुज़ारो वरना जब होश आएगा तो उस वक़्त तीर कमान से निकल चुका होगा और कमान से निकले तीर वापस नहीं आया करते।

غافِل مَنشِیں نہ وقتِ بازی ست
وَقتِ ہُنَر است وَ کارسازی ست

या'नी ऐ नौ जवान ! ग़ाफ़िल न बैठ, येह फ़ुरसत व ग़फ़्लत का वक़्त नहीं बल्कि हुनर सीखने और कामकाज करने का वक़्त है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इ़बादत की बरकत से बुढ़ापे में भी जवान

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने रजब ह़म्बली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی जवानी में इ़बादत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस वक़्त याद रखा जब वोह जवान और तुवाना था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का उस वक़्त ख़याल रखेगा जब वोह बूढ़ा और कमज़ोर हो जाएगा और उसे बुढ़ापे में भी अच्छी क़ुव्वते समाअ़त, बसारत, त़ाक़त और ज़हानत अ़त़ा फ़रमाएगा। ह़ज़रते अबुत्त़य्यिब त़बरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सो साल से ज़ियादा उ़म्र पाई, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़ेह्नी व जिस्मानी लिह़ाज़ से तन्दुरुस्त और

तुवाना थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने सिह़ह़त का राज़ पूछा तो इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने जवानी में अपनी जिस्मानी सलाहि़य्यतों को गुनाह से मह़फ़ूज़ रखा और आज जब मैं बूढ़ा हो गया हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें मेरे लिये बाक़ी रखा है ।" इस के बर अ़क्स ह़ज़रते जुनैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक बूढ़े शख़्स को देखा जो लोगों से मांग रहा था, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "इस शख़्स ने जवानी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (के हुक़ूक़) को ज़ाएअ़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुढ़ापे में इस (की क़ुव्वत) को ज़ाएअ़ फ़रमा दिया ।" (مجموعه رسائل ابن رجب،۳/۱۰۰ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जवानी की मेह़नत बुढ़ापे में सहूलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश ख़बरी है उस सालेह़ जवान के लिये जिस की जवानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में गुज़री और इ़बादत करते करते बुढ़ापे की मन्ज़िल आ गई और बुढ़ापा भी ऐसा कि ज़ौक़े इ़बादत तो है लेकिन सिह़ह़त व हिम्मत साथ नहीं दे रही, तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उसे इस लाचारी के आ़लम में भी सिह़ह़त व जवानी में की हुई इ़बादतों जितना सवाब मिलता रहेगा चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "जब बन्दा (ह़ालते इस्लाम में नेकियां करते हुए) उ़म्र के आख़िरी हिस्से में पहुंच जाए तो **अल्लाह तआ़ला** उस के नामए आ'माल में बराबर नेकियां

सब्त (तह़रीर) फ़रमाता रहता है जो वोह अपनी सिह़्ह़त के ज़माने में किया करता था ।'' (مُسْنَدِ اَبِیْ یَعْلٰی، مسند انس بن مالک، ۳/۲۹۳،حدیث:۳۶۶۶ملتقطاً)

सालेह़ जवान के लिये बुढ़ापे में इन्आ़म

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : जो बूढ़ा आदमी बुढ़ापे की वज्ह से ज़ियादा इ़बादत न कर सके मगर जवानी में बड़ी इ़बादतें करता रहा हो तो **अल्लाह तआ़ला** उसे मा'ज़ूर क़रार दे कर उस के नामए आ'माल में वोह ही जवानी की इ़बादत लिखता है । (**आ़रिफ़ बिल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी शीराज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :)

رَسْم اسْتْ کِہ مَالِکَانِ تَحْرِیْر　　آزاد کُنَنْد بَنْدَۂ پِیْر
اَے بَارِ خُدَا ، اَے عَالَمِ آرَا　　بَرسَعْدِی پِیْرِ خُوْد بَہْ بَخْشَا

(या'नी ग़ुलामों के मालिकों का त़रीक़ा है कि वोह बूढ़े ग़ुलाम को आज़ाद कर देते हैं, ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! ऐ दुन्या को आरास्ता करने वाले ! **ज़ईफ़ुल उ़म्र** सा'दी की भी बख़्शिश व मग़्फ़िरत फ़रमा दे ।) (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 89)

लिहाज़ा जवानी की क़द्र करते हुए ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत कीजिये, ताकि कल जब बुढ़ापा ज़ियादा इ़बादत करने से मा'ज़ूर कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह से सिह़्ह़त व जवानी वाली इ़बादत जैसा सवाब मिलता रहे ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह का मह़बूब बन्दा

ह़दीसे क़ुदसी है **:** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है **:** "मेरी तक़्दीर पर ईमान लाने वाला, मेरे लिखे पर राज़ी रहने वाला, मेरे दिये हुए रिज़्क़ पर क़नाअ़त करने वाला और मेरी रिज़ा की ख़ातिर अपनी नफ़्सानी शहवात को तर्क करने वाला **नौ जवान** मेरी बारगाह में मेरे बा'ज़ फ़िरिश्तों की मानिन्द है।" (جَمْعُ الجَوَامِع،۹/۲۷۶،حدیث:۲۸۷۱٤)

वाक़ेई ! अगर इन्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुत़ीअ़ो फ़रमां बरदार और उस के मह़बूब रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सच्चा ग़ुलाम बन जाए तो वोह फ़िरिश्तों की मानिन्द बल्कि बा'ज़ फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल हो जाता है।

फ़िरिश्तों से बेहतर है इन्सान बनना मगर इस में लगती है मेह़नत ज़ियादा

फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे ! "हमारे रसूल मलाएका के रसूलों से अफ़्ज़ल हैं और मलाएका के रसूल हमारे औलिया से अफ़्ज़ल हैं और हमारे औलिया अ़वामे मलाएका या'नी ग़ैरे रुसुल से अफ़्ज़ल हैं। फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार, मलाएका से किसी त़रह़ अफ़्ज़ल नहीं हो सकते।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 391, النبراس، ٥٩٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा अ़ज़मत है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे शख़्स से मह़ब्बत फ़रमाता है जिस ने अपनी जवानी को इत़ाअ़ते ख़ुदा वन्दी के लिये वक़्फ़ कर दिया हो।" (حِلْیَۃُ الْاَوْلِیَاء،۵/۳۹۴،حدیث:۷۴۹۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा दो रिवायात इत़ाअ़त शिआ़रों के लिये अपने दामन में कसीर बरकात व इनायात समोए हुए हैं कि जो सआ़दत मन्द अपनी उ़म्रे जवान ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले कामों और उस की बन्दगी में गुज़ारे, ना जाइज़ उमंगों और बुरी ख़्वाहिशों से अपने दामन को बचाए रखे, उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मक़ामे इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत और दरजए मह़बूबिय्यत पाने की उम्मीद व नवीद है क्यूं कि जवानी में नफ़्स के मुंहज़ोर घोड़े को लगाम देना मुश्किल होता है, इसी वज्ह से इ़बादते शबाब (या'नी जवानी की इ़बादत) को ज़ियादा फ़ज़ीलत ह़ासिल है, जैसा कि ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی तह़रीर फ़रमाते हैं : "**जवानी में गुनाहों से बचे** और रब عَزَّوَجَلَّ को याद रखे चूंकि जवानी में आ'ज़ा क़वी और नफ़्स गुनाहों की त़रफ़ (ज़ियादा) माइल होता है इस लिये इस ज़माने की इ़बादत बुढ़ापे की इ़बादत से अफ़्ज़ल है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 435)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दौरे पुर फ़ितन में जब कि बद क़िस्मती से कसीर नौ जवान कुरआनो सुन्नत से दूर, जवानी की मस्ती में मख़्मूर, ह़िर्सो हवसे दुन्या के नशे में चूर और नफ़्सो शैत़ान के हाथों मजबूर हो कर गुनाहों और बे ह़याइयों के सैलाब में बहते चले जा रहे थे कि तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** ने इस्लाहे़ उम्मत का **अ़लमे** हिम्मत बुलन्द किया और इस बे राह रवी व बे ह़याई के सैलाब को रोकने की काम्याब कोशिशों का सफ़र शुरूअ़ कर दिया। दा'वते इस्लामी की काम्याबी खुली किताब की मानिन्द आज सब पर आशकार (या'नी वाज़ेह़) है, कि वोह नौ जवान जो शैत़ाने ना हन्जार और नफ़्से बे लगाम के ग़ुलाम नज़र आते थे, खुश क़िस्मती से **दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए तो उन की बे रौनक़ ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब की बहार आ गई और वोह अपनी जवानी के पुर बहार अय्याम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम पर वक़्फ़ कर के इस मदनी मक़्सद को आ़म करने वाले बन गए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"**

नौ जवानाने मिल्लत और दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल के कसीरुत्ता'दाद इन्क़िलाबी इक़्दामात में से एक अहम तरीन

क़दम येह है कि इस मदनी माह़ोल ने गुनाहों में ग़ल्तां (लुढ़क्ने) और हर दम दुन्यवी मुस्तक़्बिल की बेहतरी की फ़िक्र में परेशां रहने वाले नौ जवां को शाहराहे तक़्वा पर गामज़न (या'नी चलने वाला) और फ़िक्रे आख़िरत के लिये मसरूफ़े अ़मल कर दिया। इसी मदनी माह़ोल की बरकत से कसीर नौ जवान इस्लामी भाई दुन्यवी रंगीनियों और जवानी की ग़फ़्लत शिआ़रियों से मुंह मोड़ कर राहे ख़ुदा के लिये वक़्फ़ हो गए। इसे दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में **"वक़्फ़े मदीना"** कहा जाता है।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ! मदीने का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेहतरीन ज़िन्दगी का राज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप से मदनी इल्तिजा है कि अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर और ज़िन्दगी के लम्ह़ात को क़ीमती बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत पर कमर बस्ता हो जाइये कि बेहतरीन ज़िन्दगी का राज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत व इत़ाअ़त में मुज़्मर (या'नी पोशीदा) है। जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "ज़िन्दगी हर शख़्स की गुज़रती है, बेहतरीन ज़िन्दगी वोह है जो **रब**

तबरक व तआ़ला के लिये वक़्फ़ हो जाए । अल्लाह तआ़ला ने ऐसे ही लोगों के लिये सदक़ात का खुसूसी हुक्म दिया जो अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये वक़्फ़ कर चुके ।"

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 3, स. 134, मुल्तक़ितन)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़ज़ा ह़क़ है, मगर इस शौक़ का अल्लाह वाली है
जो उन की राह में जाए वोह जान अल्लाह वाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

सत्तर सिद्दीक़ीन का सवाब पाने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत फ़रमाते हैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से बचने और उस के अह़कामात पर अ़मल करने वाले नौ जवान से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है तेरे लिये सत्तर सिद्दीक़ों के बराबर सवाब है ।

(الترغیب فی فضائل الاعمال، باب فضل عبادۃ الشاب الخ، ص۷۸ مختصرا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ीक़ी बन्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ में उस ख़ूबरू नौ जवान को सब से ज़ियादा पसन्द फ़रमाता है कि जिस ने अपनी जवानी और हुस्नो जमाल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में सर्फ़ कर दिया हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों के सामने ऐसे बन्दे पर फ़ख़्र करता और इर्शाद फ़रमाता है : "येह मेरा ह़क़ीक़ी बन्दा है।"

(الترغیب فی فضائل الاعمال،باب فضل عبادة الشاب الخ،ص۷۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कितने ख़ुश बख़्त हैं वोह नौ जवान जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मह़बूबिय्यत का शरफ़ ह़ासिल हो जाए, जिन की जवानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में गुज़री, बा वुजूद क़ुदरत के जिन का दामन नफ़्स की चालों और शैत़ान के जालों में न उलझा और जिन पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा रहा, उन ख़ुश नसीबों के लिये ज़िक्र कर्दा रिवायते मुबारका मुज़्दए जां फ़िज़ा है और ऐसा नौ जवान मुआ़शरे में भी मक़ामो मर्तबा और इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत का ह़ामिल है।

वोही जवां है क़बीले की आंख का तारा
शबाब जिस का है बे दाग़, ज़र्ब है कारी

बा ह़या नौ जवान

जवानी की बहारों को मदीने की ख़ुश्बूओं से मुअ़त्त़र करने, आ़लमे शबाब को गुनाहों के दाग़ धब्बों से बचाने और

शर्मो ह़या का पैकर बनने के लिये **दा 'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से सुन्नतों भरा बयान बनाम **''बा ह़या नौ जवान''** का केसिट हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस बयान का **64** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला भी मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन मिल सकता है। ख़ुद भी पढ़िये और दूसरों को भी तोह़फ़तन पेश कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कसीर बरकतों का ख़ज़ाना हाथ आएगा।

जवानों को बे राह रवी व सुस्ती की रविश छोड़ने, अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की पैरवी में दीनो मिल्लत की ख़िदमत करने और दीने इस्लाम को ही दुन्या व आख़िरत में काम्याबी का ज़रीआ़ समझने का ज़ेह्न देते हुए शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

लहू मुझ को रुलाती है जवानों की तन आसानी
तेरे सोफ़े हैं अफ़्रंगी, तेरे क़ालीं हैं ईरानी
अमारत क्या, शकौहे ख़ुसरवी भी हो तो क्या ह़ासिल
न ज़ोरे हैदरी तुझ में, न इस्तिग़्नाए सलमानी
न ढूंड इस चीज़ को तहज़ीबे ह़ाज़िर की तजल्ली में
कि पाया मैं ने इस्तिग़्ना में मे 'राजे मुसल्मानी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जवानी ने 'मते ख़ुदा वन्दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जवानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है जिसे येह ने'मत मिले उसे इस की क़द्र करते हुए ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त इबादत व इत़ाअ़त में गुज़ारना चाहिये, वक़्त के अनमोल हीरों को नफ़्अ़ रसानियों का

ज़रीआ़ बनाना चाहिये । ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان नक़्ल फ़माते हैं : "जवानी की इ़बादत बुढ़ापे की इ़बादत से अफ़्ज़ल है कि इ़बादात का अस्ल वक़्त जवानी है । शे'र

कर जवानी में इ़बादत काहिली अच्छी नहीं　　जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं

है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी　　येह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

वक़्त की क़द्र करो, इसे ग़नीमत जानो । गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं ।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 167) और ख़ुसूसन अय्यामे जवानी के अवक़ात की क़द्रदानी बहुत ज़रूरी है क्यूं कि **जवानी** में इन्सान के आ'ज़ा मज़बूत़ और त़ाक़त वर होते हैं, जिस की वज्ह से अह़काम व इ़बादात की बजा आवरी, तन्दही और बड़ी ख़ुश उस्लूबी के साथ मुम्किन होती है, बुढ़ापे में फिर येह बहारें कहां नसीब ! उस वक़्त तो मस्जिद तक जाना भी दुश्वार हो जाता है । भूक प्यास की शिद्दत को बरदाश्त करने की हिम्मत भी नहीं रहती, नफ़्ल तो कुजा फ़र्ज़ रोज़े पूरे करना भी भारी पड़ जाते हैं और वैसे भी जवानी की इ़बादत इम्तियाज़ी ह़ैसिय्यत रखती है जैसा कि

इ़बादत गुज़ार जवान की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم का इर्शादे अ़ज़ीम है : "सुब्ह़ के वक़्त इ़बादत करने वाले नौ जवान को

बुढ़ापे में इ़बादत करने वाले बूढ़े पर ऐसी ही फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि जैसी मुरसलीन (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को तमाम लोगों पर ।"

(جمع الجوامع،٥/٢٣٥،حدیث:١٤٧٦٩)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि इ़बादत गुज़ार जवान यक़ीनन ख़ुश बख़्त है, उस के लिये बहुत सारी फ़ज़ीलतों और सआ़दतों की नवीद (या'नी ख़ुश ख़बरी) है, लेकिन इस त़रह़ की रिवायात से कोई येह मत़लब अख़्ज़ न करे कि बूढ़े तो किसी खाते में ही नहीं । **मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो !** ऐसा नहीं, याद रखिये ! येह इस्लामी मुआ़शरे की इन्फ़िरादिय्यत व ख़ुसूसिय्यत है कि वोह बूढ़ों और ज़ईफ़ों को भी बुलन्दियों से हम कनार करता है, इस्लाम में बूढ़ों को बोझ समझ कर घर से निकाल देने और इन्हें किसी इदारे में "जम्अ़" करवा देने का कोई तसव्वुर नहीं, इस्लाम का तुर्रए इम्तियाज़ है कि इस दीने मुबीन में बिला तफ़रीक़े रंगो नस्ल व बिला इम्तियाज़े उ़म्रो क़द हर मुसल्मान अपना ख़ास मक़ाम रखता है, जिस का लिह़ाज़ रखना दूसरे मुसल्मान पर लाज़िम है, इस की मुख़्तसर वज़ाह़त **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ **32** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल "**एह़तिरामे मुस्लिम**" नामी रिसाले में भी की गई है । अल ग़रज़ ! हर मुसल्मान ख़्वाह वोह बूढ़ा हो या जवान, नज़रे इस्लाम में उस की ख़ास अहम्मिय्यत व शान है । चुनान्चे

बुढ़ापे के फ़ज़ाइल

महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : "सफ़ेद बाल न उखाड़ो क्यूं कि वोह मुस्लिम का नूर है, **जो शख़्स इस्लाम में बूढ़ा हुवा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **इस की वज्ह से उस के लिये नेकी लिखेगा और ख़त़ा मिटा देगा और दरजा बुलन्द करेगा ।"**

(ابوداؤد، کتاب الترجل، باب فی نتف الشیب، ۱۱۵/۴، حدیث: ۴۲۰۲)

हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पुरनूर है : "जो इस्लाम में बूढ़ा हुवा, येह बुढ़ापा **उस के लिये क़ियामत के दिन नूर होगा ।"**

(ترمذی،کتاب فضائل الجھاد، باب ماجاء فی فضل من شاب شیبۃ فی سبیل اللہ، ۲۳۷/۳،حدیث:۱۶۴۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लिहाज़ा ज़ईफ़ुल उ़म्र इस्लामी भाई भी दिल छोटा न करें और मायूसी की काली घटा अपने ऊपर त़ारी न होने दें कि **"जब जागे हुवा सवेरा ।"**

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी
येह बुढ़ापा भी न होगा, मौत जिस दम आ गई

अगर सफ़रे ह़यात के किसी भी मोड़ पर शुऊ़र बेदार हो जाए तो भी मायूस न हों बल्कि उसे ग़नीमत तसव्वुर कीजिये

और सुब्ह़े ज़िन्दगी की शाम होने से पहले पहले आहो ज़ारी और तक़्वा व परहेज़ गारी के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने की कोशिशों में मसरूफ़ हो जाइये और उम्मीदो बीम (या'नी उम्मीद व ख़ौफ़) के मिले जुले जज़्बात के सहारे, दामन पसारे (फैलाए), **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ रुजूअ़ कीजिये, इस आयते उम्मीद अफ़्ज़ा "لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ" (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद न हो । (پ۲۴،الزُّمر:۵۳)) को पेशे नज़र रखिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ना उम्मीद व ख़ाली दामन नहीं बल्कि मग़्फ़िरतों और बख़्शिशों की दौलते ला ज़वाल से मालामाल हो कर पलटेंगे ।

न हो नौमीद, नौमीदी ज़वाले इल्मो इरफ़ां है
उमीदे मर्दे मोमिन है ख़ुदा के राज़दानों में

और येह भी ज़ेह्न नशीन रहे कि उ़म्र के किसी भी ह़िस्से में ख़्वाह बुढ़ापे में ही सही, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करना ख़ुश बख़्तों का ह़िस्सा है वरना फ़ी ज़माना कई ह़ज़रात बुढ़ापे की दहलीज़ पर क़दम रखने के बा वुजूद मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खेलों और दीगर ह़राम कामों में सामाने लज़्ज़त तलाश करने की कोशिश में मसरूफ़ रहते हैं । जवानी तो पहले ही ग़फ़्लत में बरबाद कर दी, बुढ़ापे में भी तौफ़ीक़े ख़ैर न मिली, तो अब ज़िन्दगी के और कौन से लम्ह़ात ऐसे मिलेंगे कि जिन में आख़िरत की तय्यारी मुम्किन हो सके ?

कर न पीरी में तू ग़फ़्लत इख़्तियार ज़िन्दगी का अब नहीं कुछ ए'तिबार
ह़ल्क़ पर है मौत के ख़न्जर की धार कर बस अब अपने को मुर्दों में शुमार

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अपनी जवानी की क़द्र करनी चाहिये वरना बुढ़ापे में बा'ज़ अवक़ात पछतावे के साए परेशान करते हैं और उस वक़्त कुछ बन नहीं पड़ता, बन्दा कुछ करना चाहता है लेकिन ह़ौसला साथ नहीं देता, जवानी को याद करता है लेकिन जवानी ने तो वापस आना नहीं और बुढ़ापे से उक्ताता है मगर उस ने भी जाना नहीं और न उस वक़्त पछताने का कोई फ़ाएदा है।

जो आ के न जाए वोह बुढ़ापा देखा
जो जा के न आए वोह जवानी देखी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जवानी की इ़बादत के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल हैं, जवानी में इ़बादत करने और अपने आप को गुनाहों से बचा कर रखने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस त़रह़ नवाज़ता है चुनान्चे

सालेह़ नौ जवान को मिलने वाला इन्आ़म

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**करामाते फ़ारूक़े**

आ'ज़म'' सफ़ह़ा **24** पर है : मुशीरे रसूल, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक मर्तबा एक सालेह़ (या'नी परहेज़ गार) नौ जवान की **क़ब्र** पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : ऐ फुलां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमाया है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾

(پ ۲۷، الرّحمٰن : ٤٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें है ।

ऐ नौ जवान ! बता ! तेरा **क़ब्र** में क्या ह़ाल है ? उस सालेह़ (बा अ़मल) नौ जवान ने **क़ब्र** के अन्दर से आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का नाम ले कर पुकारा और ब आवाज़े बुलन्द दो मर्तबा जवाब दिया : ''قَدْ اَعْطَانِیْهِمَا رَبِّیْ عَزَّوَجَلَّ فِی الْجَنَّةِ या'नी मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने **येह दोनों जन्नतें मुझे अ़त़ा फ़रमा दी हैं ।''**

(تاریخ مدینه دمشق، ٤٥/٤٥٠)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ ! इस वाक़िए से पता चला कि जो शख़्स नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारेगा और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ां व तरसां रहेगा, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते कामिला से दो जन्नतों का मुस्तह़िक़ ठहरेगा । लिहाज़ा जवानी को नेकी व परहेज़ गारी में सर्फ़ कीजिये, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी से बचिये, अभी से संभल जाइये ! याद रखिये ! येह हुस्नो जवानी दौलते फ़ानी है और इस पर ग़ुरूर व **तकब्बुर** ह़माक़त व नादानी है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

ढल जाएगी येह जवानी जिस पे तुझ को नाज़ है तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا إِلَى الله ! أَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब दो आबिद व ख़ाइफ़ नौ जवानों के हैरत अंगेज़ वाक़िआत मुलाहज़ा फ़रमाइये और देखिये कि यादे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से दिलों को आबाद करने वालों को कैसी करामात से नवाज़ा जाता है चुनान्चे

बा करामत नौ जवान

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि एक सफ़र के दौरान मुझे सख़्त प्यास लगी तो मैं पानी की तलाश में एक वादी की जानिब चल पड़ा। अचानक मैं ने एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी, तो सोचा : शायद ! कोई दरिन्दा है जो मेरी तरफ़ आ रहा है। चुनान्चे मैं भागने ही वाला था कि पहाड़ों से किसी ने मुझे पुकार कर कहा : "ऐ इन्सान ! ऐसा कोई मुआमला नहीं जिस तरह तुम समझ रहे हो, येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली है जिस ने शिद्दते हसरत से एक लम्बी सांस ली तो उस की आवाज़ बुलन्द हो गई।" जब मैं अपने रास्ते की जानिब वापस पलटा तो एक **नौ जवान को इबादत में मशग़ूल पाया**। मैं ने उसे सलाम किया और अपनी प्यास का बताया तो उस ने कहा : "ऐ मालिक (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

इतनी बड़ी सल्त़नत में तुझे पानी का एक क़त़रा भी नहीं मिला।" फिर वोह चट्टान की त़रफ़ गया और उसे ठोकर मार कर कहने लगा : "उस ज़ात की क़ुदरत से हमें पानी से सैराब कर जो बोसीदा हड्डियों को भी ज़िन्दा फ़रमाने पर क़ादिर है।" **अचानक चट्टान से पानी ऐसे बहने लगा जैसे चश्मे से बहता है।** मैं ने जी भर कर पीने के बा'द अ़र्ज़ की : "मुझे ऐसी चीज़ की नसीह़त फ़रमाइये जिस से मुझे नफ़्अ़ होता रहे।" तो उस ने कहा : "**तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हो जाइये,** वोह (रब عَزَّوَجَلَّ) आप को जंगलात में पानी से सैराब कर देगा।" इतना कह कर वोह अपने रास्ते पर चला गया।

(الروض الفائق، ص١٦٦، بتصرفٍ)

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में ही ऐ काश ! गुज़रे सदा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सालेह़ व ख़ाइफ़ नौ जवान

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक बार मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का गुज़र एक निहायत सर सब्ज़ो शादाब ख़ुशनुमा बाग़ से हुवा, तो देखा कि **एक नौ जवान सेब के दरख़्त के नीचे नमाज़ में मश्ग़ूल है।** आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उस सालेह़ जवान से हम कलामी का इश्तियाक़ हुवा। जब उस ने सलाम फैरा तो आप ने उसे अपनी जानिब मुतवज्जेह करने की कोशिश की तो उस ने जवाब देने

के बजाए ज़मीन पर येह शे'र लिख दिया :

مُنِعَ اللِّسَانُ مِنَ الْكَلَامِ لِاَنَّهٗ   كَهْفُ الْبَلَاءِ وَجَالِبُ الْاٰفَاتِ
فَاِذَا نَطَقْتَ فَكُنْ لِّرَبِّكَ ذَاكِرًا   لَا تَنْسَهٗ وَاحْمِدْهُ فِي الْحَالَاتِ

या'नी ज़बान कलाम से रोक दी गई है क्यूं कि येह (ज़बान) त़रह़ त़रह़ की बलाओं का ग़ार और आफ़ात लाने वाली है इस लिये जब बोलो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो, उसे किसी वक़्त फ़रामोश न करो और हर ह़ाल में उस की ह़म्द बजा लाते रहो।

नौ जवान की इस तह़रीर का आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के क़ल्बे अन्वर पर गहरा असर हुवा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर गिर्या त़ारी हो गया। जब इफ़ाक़ा हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी जवाबन ज़मीन पर उंगली से येह अश्आ़र लिख दिये :

وَمَا مِنْ كَاتِبٍ اِلَّا سَيَبْلٰى   وَيُبْقِى الدَّهْرُ مَا كَتَبَتْ يَدَاهُ
فَلَا تَكْتُبْ بِكَفِّكَ غَيْرَ شَيْءٍ   يَسُرُّكَ فِي الْقِيَامَةِ اَنْ تَرَاهُ

या'नी हर लिखने वाला एक दिन क़ब्र में जा मिलेगा मगर उस की तह़रीर हमेशा बाक़ी रहेगी इस लिये अपने हाथ से ऐसी बात लिखो जिसे देख कर बरोज़े क़ियामत तुम्हें ख़ुशी मिले।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का बयान है कि मेरा नविश्ता (तह़रीर) पढ़ कर उस जवाने सालेह़ ने एक चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। मैं ने सोचा कि इस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम कर दूं मगर हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी : **ज़ुन्नून !** इसे रहने दो, रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने इस से अ़ह्द किया है कि फ़िरिश्ते तेरी तज्हीज़ो

तक्फ़ीन करेंगे। येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बाग़ के एक गोशे में मसरूफ़े इबादत हो गए और चन्द रक्आ़त पढ़ने के बा'द देखा तो वहां उस नौ जवान का नामो निशान भी न था। (روض الرياحين، ص٤٩،بتصرفٍ)

रहूं मस्तो बेख़ुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सायए अ़र्श पाने वाले ख़ुश नसीब

जवानी में इबादत करने और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वालों को मुबारक हो कि बरोज़े क़ियामत जब सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, सायए अ़र्श के इलावा उस जां गुज़ा (या'नी जान को अज़िय्यत देने वाली) गरमी से बचने का कोई ज़रीआ़ न होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसे **ख़ुश क़िस्मत नौ जवान को अपने अ़र्श का सायए रह़मत अ़त़ा फ़रमाएगा** जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ ख़त़ लिखा कि "इन सिफ़ात के ह़ामिल **मुसल्मान अ़र्श के साए में होंगे :** (उन में से दो येह हैं) (1)...... वोह शख़्स जिस की नश्वो नमा इस ह़ाल में हुई कि उस की **सोह़बत, जवानी और क़ुव्वत अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पसन्द और रिज़ा वाले कामों में सर्फ़ हुई और (2)...... वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया और उस के ख़ौफ़ से उस की आंखों से आंसू बह निकले।''

(مُصَنَّف اِبْنِ اَبِی شَیْبَة، کتاب الزھد، کلام سلمان، ۸/۱۷۹، حدیث:۱۲، ملتقطاً)

या रब ! मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं अक्सर

तू अपनी महब्बत में मुझे मस्त बना दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام **जवानी** की बहुत क़द्र करते और इस की क़द्र करने की तल्क़ीन भी फ़रमाते चुनान्चे

इमाम ग़ज़ाली की नसीहत

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی जवानों और तौबा में टाल मटोल करने वालों को समझाते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : ''क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि तुम कब से अपने नफ़्स से वा'दा कर रहे हो कि कल अ़मल करूंगा, कल करूंगा और **वोह ''कल'' ''आज'' में बदल गया।** क्या तुम नहीं जानते कि जो ''कल'' आया और चला गया वोह गुज़श्ता ''कल'' में तब्दील हो गया बल्कि अस्ल बात येह है कि तुम ''आज'' अ़मल करने से आ़जिज़ हो तो ''कल'' ज़ियादा आ़जिज़ होगे (आज का काम कल पर छोड़ने और तौबा व इत़ाअ़त में ताख़ीर करने वाला) उस आदमी की त़रह़ है कि जो दरख़्त को उखाड़ने से जवानी में आ़जिज़ हो और उसे दूसरे साल तक मुअख़्ख़र कर दे ह़ालां कि

वोह जानता है कि जूं जूं वक़्त गुज़रता चला जाएगा दरख़्त ज़ियादा मज़बूत़ और पुख़्ता होता जाएगा और उखाड़ने वाला कमज़ोर तर होता जाएगा पस जो उसे जवानी में न उखाड़ सका वोह बुढ़ापे में क़त़्अ़न न उखाड़ सकेगा ।" (اِحْیاءُ العُلُوم،٤/٧٢)

उतरते चांद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले
अंधेरा पाख आता है येह दो दिन की उजाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى का येह मुबारक फ़रमान किस क़दर फ़िक्र अंगेज़ है कि जो शख़्स जवानी में अह़कामे शरइय्या व इत़ाअ़ते इलाहिय्यह की बजा आवरी में कोताही बरतता है तो उस से कैसे उम्मीद रखी जा सकती है कि वोह बुढ़ापे में इन ग़लत़ियों का मुदावा कर सकेगा क्यूं कि उस वक़्त तो जिस्म व आ'ज़ा कमज़ोरी का शिकार हो चुके होंगे लिहाज़ा **जवानी** को ग़नीमत जानिये और इसी उ़म्र में नफ़्स के बे लगाम और मुंहज़ोर घोड़े को लगाम दे दीजिये और तौबा करने में जल्दी कीजिये कि न जाने किस वक़्त पैग़ामे अजल (या'नी मौत का पैग़ाम) आ जाए क्यूं कि मौत तो न जवानी का लिह़ाज़ करती है न बचपन की परवाह ।

मौत न देखे हुस्नो जवानी न येह देखे बचपन ख़्वाह हो उ़म्र अठारह बरसी या हो जावे पचपन

लिहाज़ा ख़्वाह उ़म्र का कोई भी हि़स्सा हो, मौत को पेशे नज़र रखिये, तौबा करने में जल्दी कीजिये और जवान तो

इस पर ज़ियादा ध्यान दे कि जवानी की तौबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बहुत पसन्द है चुनान्चे

जवानी में तौबा की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُحِبُّ الشَّابَّ التَّائِبَ**'' या'नी जवानी में तौबा करने वाला शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब है।''

(كنز العُمّال، كتاب التوبة، الفصل الاول فى الخ، الجزء٤، ٣/٨٧، حديث:١٠١٨١)

जवानी में तौबा करने वाला मह़बूब क्यूं ?

मुबल्लिग़े इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ शुऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अपने बन्दे से मह़ब्बत उस वक़्त होती है जब कि वोह जवानी में तौबा करने वाला हो क्यूं कि नौ जवान तर और सर सब्ज़ टहनी की त़रह़ होता है। जब वोह अपनी जवानी और हर त़रफ़ से शहवात व लज़्ज़ात से लुत़्फ़ उठाने और इन की रग़बत पैदा होने की उ़म्र में तौबा करता है, और येह ऐसा वक़्त होता है कि दुन्या उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है। इस के बा वुजूद मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिये वोह उन तमाम चीज़ों को तर्क कर देता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का मुस्तह़िक़ बन जाता है और उस के मक़्बूल बन्दों में उस का शुमार होने लगता है।'' (ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 75)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुरसलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तौबा करने वाले नौ जवान से ज़ियादा पसन्दीदा कोई नहीं।" (کنز العمال،کتاب المواعظ...الخ، الترغیب الاحاذی، الجزء:۱۵، ۳۳۲/۸، حدیث:۴۳۱۰۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जवानी में इस्तिग़्फ़ार कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जवानी में इ़बादत व तौबा की त़रफ़ माइल होने वाला नौ जवान किस क़दर सआ़दत मन्द है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपना प्यारा बन्दा बना लेता है। सच है कि

دَرْ جوانی تَوْبَہ کَرْدَن شیوۂ پیغمبری
وَقْتِ پیری گُرگ ظَالِم مِیْ شَوَد پَرہیزگار

या'नी जवानी में इस्तिग़्फ़ार करना अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत है, वरना बुढ़ापे में तो ज़ालिम भेड़िया भी परहेज़ गारी का लबादा ओढ़ लेता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक वस्वसा और उस का इ़लाज

वस्वसा : मज़्कूरा शे'र में तौबा व इस्तिग़्फ़ार को सुन्नते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कहा गया है, ह़ालां कि तौबा तो गुनाह पर की

जाती है तो क्या مَعَاذَاللہ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से भी गुनाह सरज़द हो सकते हैं ?

इलाजे वस्वसा : नहीं, हरगिज़ नहीं, ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हर ख़ता व गुनाह से मा'सूम हैं और मा'सूम के येह मा'ना हैं कि इन के लिये हिफ़्ज़े इलाही का वा'दा हो चुका जिस की वज्ह से इन से गुनाह होना शरअ़न ना मुम्किन है, नीज़ ऐसे अफ़आ़ल से जो वजाहत और मुरव्वत के ख़िलाफ़ हैं क़ब्ले नुबुव्वत और बा'दे नुबुव्वत बिल इज्माअ़ मा'सूम हैं और कबाइर से भी मुत़्लक़न मा'सूम हैं और ह़क़ येह है कि तअ़म्मुदे सग़ाइर से भी क़ब्ले नुबुव्वत और बा'दे नुबुव्वत मा'सूम हैं।

(मुलख़्ख़स अज़ "बहारे शरीअ़त", जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 38 ता 39)

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धुवां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

अम्बियाए किराम व मुरसलीने उ़ज़्ज़ाम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से जो तौबा व इस्तिग़्फ़ार के मा'मूलात मन्क़ूल हैं वोह बत़ौरे आ़जिज़ी और ता'लीमे उम्मत के लिये हैं। इसी लिये तौबा व इस्तिग़्फ़ार को मज़्कूरा शे'र में अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सुन्नत कहा गया है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जवानों को नसीह़त

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन

मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने एक नौ जवान को नसीह़त करते हुए कहा : ऐ जवान ! तुझे तेरी **जवानी** धोके में न डाले, कितने ही जवान ऐसे थे जिन्हों ने तौबा को मुअख़्ख़र और अपनी उम्मीदों को त़वील कर दिया, मौत को भुला दिया और कहते रहे कि कल तौबा कर लेंगे, परसों तौबा कर लेंगे यहां तक कि इसी ग़फ़्लत में **मलकुल मौत** आ गए और वोह ग़ाफ़िल अंधेरी क़ब्र में जा सोए । उन्हें न माल ने, न ग़ुलामों ने, न औलाद और न ही मां बाप ने कोई फ़ाएदा दिया ।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾

(پ۱۹، الشعراء، آیت:۸۸،۸۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे, मगर वोह जो **अल्लाह** के हु़ज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर ।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب، ص۸۷)

ख़न्दा ज़न हैं बुलबुलें गुल का निशां कुछ भी नहीं
रोती है शबनम कि नैरंगे जहां कुछ भी नहीं
येह तेरा हुस्नो शबाब ऐ नौ जवां ! कुछ भी नहीं
चार दिन की चांदनी है फिर अंधेरी रात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत की तय्यारी करने, गुनाहों से बचने, नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने और अपनी जवानी को मदनी रंग में रंगने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतें सीखने के

लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के **मदनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **नेक आ'माल** पर अ़मल कर के रोज़ाना जाएज़ा के ज़रीए़ नेक आ'माल का रिसाला पुर कीजिये और हर माह अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाइये। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में ख़ूब शिर्कत कीजिये, तौबा पर इस्तिक़ामत पाने और इस के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **132** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**तौबा की रिवायात व ह़िकायात**" का मुत़ालआ़ कीजिये नीज़ इल्मो ह़िक्मत के मोती चुनने के लिये मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत कीजिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी का चेनल क्या है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा **86** पर है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मुतअ़द्दद शो'बे हैं जिन के ज़रीए़ इस्लाम की बहारें लुटाई जा रही हैं, इन्हीं में एक शो'बा

"दा'वते इस्लामी का चेनल" भी है जिस के ज़रीए़ घरों के अन्दर दाख़िल हो कर **दा'वते इस्लामी** इस्लाम का पैग़ाम आ़म कर रही है । **दा'वते इस्लामी का चेनल** वाह़िद चेनल है जो कि सो फ़ीसदी इस्लामी रंग में रंगा हुवा है, इस में न फ़िल्में डिरामे हैं, न गाने बाजे और न औ़रत की नुमाइश है, न ही किसी क़िस्म की मूसीक़ी । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी के चेनल** के ज़रीए़ बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ों के पाबन्द बने हैं और ला ता'दाद अफ़्राद गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों पर अ़मल करने लगे हैं । **दा'वते इस्लामी के चेनल** की बरकतों का अन्दाज़ा लगाने के लिये इस की एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने मुझे बर्क़ी डाक (E-MAIL) के ज़रीए़ एक "मदनी बहार" पेश की, उस का लुब्बे लुबाब येह है : आज कल येह ह़ाल है कि दौराने गुफ़्त्गू अक्सर इस बात का अन्दाज़ा नहीं हो पाता कि **ग़ीबत** का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका है ! एक बार एक इस्लामी भाई ने चन्द इस्लामी भाइयों की मौजूदगी में कहा : मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया कि मेरी बहन जो कि इन्तिहाई **ग़ुसीली** त़बीअ़त की है, अगर कभी किसी से नाराज़ हो जाए तो ख़ुद से बढ़ कर मुलाक़ात में पहल नहीं करती, मेरी भाभी और बहन में चन्द मुआ़मलात की बिना पर आपस में चप्क़लश हुई और बहन ने बातचीत बन्द कर दी,

हुस्ने इत्तिफ़ाक़ कि उसी रात **दा'वते इस्लामी** के हर दिल अ़ज़ीज़ सो फ़ीसदी इस्लामी **दा'वते इस्लामी के चेनल** पर "मदनी मुज़ाकरा" नश्र किया गया जिस में **ग़ीबत की तबाह कारियों** से बचने का ज़ेह्‌न दिया गया था। मेरी बहन ने जब वोह मदनी मुज़ाकरा सुना तो اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी वोही **ग़ुसीली** बहन जो बढ़ कर किसी से मुलाक़ात नहीं करती थी अज़ ख़ुद आगे बढ़ी और उस ने मेरी भाभी से न सिर्फ़ मुलाक़ात की बल्कि मुआ़फ़ी भी मांगी और दोनों में सुल्ह़ हो गई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (مِشْكاةُ الْمَصابِيح،١/٥٥ حديث:١٧٥)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

"मदीने की हाज़िरी" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल

﴾1﴿ जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ पढ़िये : "بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ" **तरजमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बिग़ैर न ताक़त है न क़ुव्वत।" (سنن ابی داؤد، ج٤ ص٤٢٠ حدیث٥٠٩٥) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस दुआ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले हाल रहेगी ﴾2﴿ घर में दाखिल होने की दुआ : اَللّٰھُمَّ اِنِّیٓ اَسْئَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰہِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰہِ خَرَجْنَا وَعَلَی اللّٰہِ رَبِّنَا تَوَکَّلْنَا. (ایضاً۔حدیث٥٠٩٦) (**तरजमा : ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दाखिल होने और निकलने की भलाई मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम (घर में) दाखिल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हम ने भरोसा किया) दुआ पढ़ने के बा'द घर वालों को सलाम करे फिर बारगाहे रिसालत عَلَیْہِ التَّحِیَّۃُ وَالثَّنَاء में सलाम अ़र्ज़ करे, इस के बा'द **सूरतुल इख़्लास** शरीफ़ पढ़े। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ी में बरकत और घरेलू झगड़ों से बचत

होगी। ﴾3﴿ अपने घर में आते जाते महा़रिम व महू़रमात (मसलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये ﴾4﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर मसलन **بسم اللہ** कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है ﴾5﴿ अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ (या'नी हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे। (ردالمحتار، ج۹، ص۶۸۲) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ (या'नी या नबी ! आप पर सलाम) क्यूं कि हु़ज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे़ मुबारक मुसल्मानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है। (شرح الشفاء للقاری، ج۲ ص۱۱۸) ﴾6﴿ जब किसी के घर में दाख़िल हों तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ? ﴾7﴿ अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले तो ब ख़ुशी लौट जाइये हो सकता है किसी मजबूरी के तह़्त साह़िबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो ﴾8﴿ जब आप के घर पर कोई दस्तक दे तो सुन्नत येह है कि पूछिये : कौन है ? बाहर वाले को चाहिये कि अपना नाम बताए : मसलन कहे : ''मुह़म्मद इल्यास।'' नाम बताने के बजाए इस मौक़अ़ पर ''मदीना !'', ''मैं हूं।'', ''दरवाज़ा

खोलो" वग़ैरा कहना सुन्नत नहीं **﴾9﴿** जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े **﴾10﴿** किसी के घर में झांकना मम्नूअ़ है बा'ज़ लोगों के मकान के सामने नीचे की त़रफ़ दूसरों के मकानात होते हैं उन को सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है **﴾11﴿** किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न करें इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है **﴾12﴿** वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ़ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी कीजिये और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये।

ढेरों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

(101 मदनी फूल, स. 23)

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल कौन ?	17
जवानी की तलाश	1	नौ जवानाने मिल्लत और दा'वते इस्लामी	19
ईंट के जवाब में फूल पेश कीजिये !	4	बेहतरीन ज़िन्दगी का राज़	20
नेकी की दा'वत आ़म कीजिये !	5	सत्तर सिद्दीक़ीन का सवाब पाने वाला	21
मताए वक़्त की क़द्र कीजिये !	6	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ीक़ी बन्दा	21
जवानी की ता'रीफ़	7	बा ह़या नौ जवान	22
फ़ैज़ाने कुरआन और नौ जवान	7	जवानी ने'मते ख़ुदा वन्दी	23
जवानी की इ़बादत बुढ़ापे में सबबे आ़फ़िय्यत	8	इ़बादत गुज़ार जवान की फ़ज़ीलत	24
मद्रसतुल मदीना बालिग़ान	9	बुढ़ापे के फ़ज़ाइल	26
मद्रसतुल मदीना बालिग़ात	9	सालेह़ नौ जवान को मिलने वाला इन्आ़म	28
मदनी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया	10	बा करामत नौ जवान	30
जवानी को ग़नीमत जानिये !	11	सालेह़ व ख़ाइफ़ नौ जवान	31
जवानी की क़द्र कीजिये !	12	सायए अ़र्श पाने वाले ख़ुश नसीब	33
ब वक़्ते रिह़्लत ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया का फ़रमान	13	इमाम ग़ज़ाली की नसीह़त	34
बुज़ुर्गों की आ़जिज़ी हमारे लिये रहनुमाई	13	जवानी में तौबा की फ़ज़ीलत	36
इ़बादत की बरकत से बुढ़ापे में भी जवान	14	जवानी में तौबा करने वाला मह़बूब क्यूं ?	36
जवानी की मेह़नत बुढ़ापे में सहूलत	15	जवानी में इस्तिग़्फ़ार कीजिये	37
सालेह़ जवान के लिये बुढ़ापे में इन्आ़म	16	एक वस्वसा और उस का इ़लाज	37
अल्लाह का मह़बूब बन्दा	17	जवानों को नसीह़त	38
		दा'वते इस्लामी का चेनल क्या है ?	40
		घर में आने जाने के 12 मदनी फूल	43
		मआख़िज़ो मराजेअ़	47

ماخذومراجع

قرآن مجید

نمبرشمار	کتاب	مطبوعہ
1	کنزالایمان فی ترجمۃ القرآن	مکتبۃ المدینہ
2	جامع ترمذی	دار المعرفه، بیروت ۱۴۱۴ھ
3	سنن ابی داؤد	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
4	مسند ابی یعلٰی	دار الکتب العلمیه، بیروت ۱۴۱۸ھ
5	مصنف ابن ابی شیبه	المجلس العلمی بیروت ۱۴۲۷ھ
6	مشکاۃالمصابیح	دار الکتب العلمیه بیروت ۱۴۲۱ھ
7	کنزالعمال	دار الکتب العلمیه، بیروت ۱۴۱۹ھ
8	جمع الجوامع	دارالکتب العلمیه ۱۴۲۱ھ
9	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
10	حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیه،بیروت ۱۴۱۸ھ
11	تاریخ مدینه دمشق	دارالفکربیروت 1995ء
12	ردالمحتار	دار المعرفه، بیروت ۱۴۲۰ھ
13	شرح شفا	دارالکتب العلمیةبیروت ۱۴۲۱ھ
14	احیاء العلوم	دار صادربیروت 2000ء
15	لباب الاحیاء	دارالبیروتی 2004ء
16	مکاشفة القلوب	دارالکتب العلمیةبیروت لبنان
17	مجموعه رسائل ابن رجب	الفاروق الحدیثیه للطباعة والنشر، القاهره
18	روض الریاحین	دارالکتب العلمیةبیروت ۱۴۲۱ھ
19	الروض الفائق	دار احیاءالتراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
20	الترغیب فی فضائل الاعمال	دارالکتب العلمیةبیروت ۱۴۲۴ھ
21	تفسیرنعیمی	
22	نورالعرفان	
23	مراۃالمناجیح	
24	فتاوی رضویہ	
25	بہارشریعت	مکتبۃ المدینہ
26	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ
27	کرامات فاروق اعظم	مکتبۃ المدینہ
28	حکایتیں اور نصیحتیں	مکتبۃ المدینہ
29	بوستان سعدی	انتشارات عالمگیر، تہران
30	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ
31	ذوق نعت	
32	وسائل بخشش مرمم	مکتبۃ المدینہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये "**नेक आ'माल**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**मदनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ